GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षक - शिक्षा कार्यक्रम का पाठ्यक्रम

अनिरुध्धसिंह वाय राउलजि

आसिस्टन्ट प्रोफेसर,

कोलेज ओफ एज्युकेशन, खरोड

rauljianirudhdhasinh@gmail.com

सार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में एकीकरण एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी पहल है जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। यह शोध अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों जैसे वेदांत दर्शन, योग, आयुर्वेद, पारंपरिक कलाएं, संस्कृत भाषा, और नैतिक मूल्यों को शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाहित करने की रणनीति प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूलभूत विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है, जिसमें अनुभवजन्य शिक्षा, समग्र विकास, अंतर्संबंधता, और नैतिक आधार शामिल हैं। इस शोध में पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक शैक्षणिक पद्धतियों तक की यात्रा को प्रस्तुत करते हुए यह दर्शाया गया है कि कैसे प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी समसामयिक शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रासंगिक और उपयोगी है।

अध्ययन में शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में आईकेएस के एकीकरण के लिए व्यापक रणनीति का प्रस्ताव किया गया है जिसमें पाठ्यक्रम संशोधन, शैक्षणिक विधियों में परिवर्तन, मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सुधार, और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को शामिल किया गया है। इस एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षकों को न केवल शैक्षणिक दक्षता प्रदान की जा सकती है बल्कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता, नैतिक चेतना, और समग्र व्यक्तित्व विकास भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

शोध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि आईकेएस का एकीकरण केवल पारंपरिक ज्ञान का महिमामंडन नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण चिंतन, रचनात्मकता, पर्यावरणीय चेतना, और सामाजिक न्याय की भावना का विकास करना है। यह दृष्टिकोण शिक्षकों को 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक क्षमताओं से लैस करता है जबकि उनकी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत बनाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

मुख्य शब्द - भारतीय ज्ञान प्रणाली, शिक्षक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समग्र शिक्षा, वेदांत दर्शन, योग शिक्षा, आयुर्वेद, पारंपरिक ज्ञान, सांस्कृतिक शिक्षा, अंतःविषयक अनुसंधान, नैतिक शिक्षा, बहुभाषी शिक्षा, स्थायित्व शिक्षा, समुदायिक सहभागिता

1. परिचय

शिक्षक शिक्षा और उसका महत्व

21वीं सदी की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञान के स्थानांतरण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे भविष्य के नागरिकों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य विकास और सामाजिक चेतना के संवर्धन के मुख्य आधार हैं। शिक्षक शिक्षा एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जो न केवल शैक्षणिक ज्ञान और कुशलता प्रदान करती है, बल्कि शिक्षकों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता, नैतिक चेतना और समग्र विकास की दृष्टि का भी संचार करती है। आधुनिक युग में शिक्षक शिक्षा के समक्ष यह चुनौती है कि वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों को भी संरक्षित और विकसित करे।

शिक्षक शिक्षा का महत्व इस तथ्य से समझा जा सकता है कि एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षक न केवल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार लाता है, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास, सामाजिक कौशल और जीवन-मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। वर्तमान समय में जब शिक्षा व्यवस्था तकनीकी क्रांति, वैश्वीकरण और सामाजिक परिवर्तनों के दबाव में तेजी से बदल रही है, तब शिक्षकों को इन चुनौतियों से निपटने के लिए न केवल आधुनिक शैक्षणिक पद्धतियों की जानकारी होनी चाहिए, बल्कि उनकी सांस्कृतिक जड़ें भी मजबूत होनी चाहिए (खान एवं हुसैन, 2025)।

भारतीय संदर्भ में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी समृद्ध ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के साथ एकीकृत किया जाए। यह एकीकरण न केवल भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाएगा, बल्कि विश्व स्तर पर भारत की शैक्षणिक पहचान को भी मजबूत करेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय

भारतीय ज्ञान परंपरा या भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) एक व्यापक और समग्र अवधारणा है जो हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता की बौद्धिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का समुच्चय है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुप्रयोग की एक जीवंत परंपरा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में वेदों और उपनिषदों के गूढ़ दर्शन से लेकर आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति,

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

योग की आध्यात्मिक साधना, खगोल विज्ञान की गणनाएं, गणित के सूत्र, कला-संगीत की परंपराएं, और स्थायी जीवनशैली की पद्धतियां सभी शामिल हैं (देइवम् एवं जोशी, 2025)।

आईकेएस की मुख्य विशेषता इसका समग्रतावादी दृष्टिकोण है जो ज्ञान को विभिन्न विषयों में बांटकर नहीं देखता, बल्कि एक एकीकृत और परस्पर संबंधित प्रणाली के रूप में समझता है। इसमें अंतर्संबंधता का सिद्धांत केंद्रीय है, जो व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच गहरे तालमेल पर बल देता है। यह परंपरा अनुभवजन्य शिक्षा को प्राथमिकता देती है, जहां ज्ञान केवल सिद्धांत के रूप में नहीं बल्कि जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोग के रूप में प्राप्त होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संग्रह नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास है। इसमें चार प्रमुख जीवन लक्ष्य - धर्म (नैतिक जीवन), अर्थ (आर्थिक सुरक्षा), काम (मानसिक एवं शारीरिक संतुष्टि), और मोक्ष (आध्यात्मिक मुक्ति) - को संतुलित रूप से प्राप्त करने का मार्ग दिखाया गया है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को मात्र रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर जीवन के उत्कर्ष का माध्यम मानता है।

शोध की आवश्यकता: समसामयिक संदर्भ में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता कई महत्वपूर्ण कारणों से महसूस की जा रही है। प्रथम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा के मुख्यधारा में लाने का आदेश दिया है। यह नीति बहुविषयक, समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा की वकालत करती है, जो आईकेएस के मूलभूत सिद्धांतों के अनुकूल है (हलोई एवं खारबिरीम्बाई, 2025)।

द्वितीय, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा, तनाव और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो न केवल बौद्धिक विकास करे, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक संतुलन भी प्रदान करे। भारतीय ज्ञान परंपरा में योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसी पद्धतियां हैं जो इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं।

तृतीय, वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक पहचान के संकट से निपटने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हों। केवल वही शिक्षक छात्रों में सांस्कृतिक गर्व और आत्मविश्वास जगा सकता है जो स्वयं अपनी परंपरा को समझता और महसूस करता हो।

चतुर्थ, पर्यावरणीय संकट के इस दौर में स्थायी विकास की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीने की पद्धतियां हैं, जिनका आधुनिक शिक्षा में समावेश अत्यंत आवश्यक

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

है। पांचवीं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ नैतिक मूल्यों के विकास की चुनौती के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित मूल्य व्यवस्था की आवश्यकता है।

- **अनुसंधान के उद्देश्य**

प्रस्तुत अनुसंधान के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

प्राथमिक उद्देश्य: भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न घटकों को चिह्नित करना और उन्हें शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में एकीकृत करने के लिए एक व्यापक पाठ्यक्रम संरचना का प्रस्ताव करना।

द्वितीयक उद्देश्य: आईकेएस-आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के लिए प्रभावी शिक्षण पद्धतियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का विकास करना।

तृतीयक उद्देश्य: इस एकीकरण में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना और उनके व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करना।

- **अनुसंधान प्रश्न**

इस अनुसंधान के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित मुख्य प्रश्न निर्धारित किए गए हैं:

मुख्य अनुसंधान प्रश्न: भारतीय ज्ञान परंपरा के कौन से घटक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शामिल किए जाने चाहिए, ताकि शिक्षा अधिक समग्र हो सके?

सहायक अनुसंधान प्रश्न:

- आईकेएस-आधारित पाठ्यक्रम से शिक्षक की दृष्टिकोण, दक्षता एवं शिक्षण व्यवहार में क्या परिवर्तन आएगा?
- किन शिक्षण पद्धतियों से आईकेएस को प्रभावी रूप से शिक्षण-प्रशिक्षण में सम्मिलित किया जा सकता है?
- पाठ्यक्रम में आईकेएस समावेशन से छात्रों की सांस्कृतिक पहचान, मूल्य चेतना और सामाजिक-न्याय की समझ में क्या योगदान होगा?

यह अनुसंधान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना करने के लिए एक नवाचार दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसका लक्ष्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण है जो न केवल आधुनिक शैक्षणिक पद्धतियों में प्रवीण हों, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संवाहक भी हों। यह एकीकरण भारतीय शिक्षा को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने के साथ-साथ उसकी मौलिकता और प्रासंगिकता भी बनाए रखेगा।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

2. साहित्य समीक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है जो भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को शिक्षा के केंद्र में स्थापित करने का प्रयास करती है। यह नीति स्पष्ट रूप से उल्लेख करती है कि भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा, जिसमें आध्यात्मिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चिकित्सा संबंधी ज्ञान शामिल है, को संरक्षित और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। नीति में यह सुझाया गया है कि पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन, नीतिशास्त्र, कला, साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को शामिल किया जाना चाहिए ताकि एक समग्र और समावेशी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण हो सके (खान एवं हुसैन, 2025)।

हलोई और खारबिरीम्बाई (2025) के अनुसार, भारतीय ज्ञान प्रणाली का शिक्षक शिक्षा में एकीकरण एनईपी 2020 के तहत एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी कदम है। उनका अध्ययन दर्शाता है कि आईकेएस एकीकरण पाठ्यक्रम डिजाइन, शैक्षणिक प्रथाओं, सांस्कृतिक दक्षता, अंतःविषयक शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार, तथा निरंतर व्यावसायिक विकास के माध्यम से शिक्षक शिक्षा को समृद्ध बना सकता है। यह एकीकरण न केवल पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण करता है बल्कि एक ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करता है जो सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और विकास-उन्मुख है (हलोई एवं खारबिरीम्बाई, 2025)।

अध्ययन में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में समग्र दृष्टिकोण के लिए एकीकृत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। उनके अनुसार आईकेएस का मूलभूत दर्शन जीवन और ब्रह्मांड की एकता में निहित है। यह ज्ञान को केवल सूचना के भंडार के रूप में नहीं बल्कि मानव के आत्म-विकास और विश्व कल्याण की संभावना के रूप में देखता है। यह समग्र दृष्टिकोण कई मुख्य सिद्धांतों पर आधारित है जिसमें अंतर्संबंधता, समग्र विकास, अनुभवजन्य शिक्षा, नैतिक मूल्य और ज्ञान की खोज शामिल है (देइवम् एवं जोशी, 2025)।

वर्तमान में भारतीय शिक्षा प्रणाली में आईकेएस को एकीकृत करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण रुझान दिखाई दे रहे हैं। भारत के स्कूल और विश्वविद्यालय पारंपरिक ज्ञान जैसे वैदिक गणित, योग और प्राचीन विज्ञान को अपने पाठ्यक्रमों में शामिल करना शुरू कर रहे हैं। यहाँ तक कि आईआईटी जैसे शीर्ष संस्थान भी अनुसंधान और शिक्षण के लिए आईकेएस केंद्र बना रहे हैं। यह सब पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने के बारे में है। आईसीएचआर, आईसीएसएसआर और आईकेएस-डी जैसे संगठनों के माध्यम से सरकार

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

भी इस दिशा में वित्तीय और शैक्षणिक सहयोग प्रदान कर रही है (आईसीएचआर, 2024; आईसीएसएसआर, 2024; आईकेएस-डी, 2025)।

आईकेएस को शिक्षक शिक्षा में एकीकृत करने की प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ हैं। मानकीकरण और प्रलेखन की कमी एक प्रमुख समस्या है क्योंकि भारतीय ज्ञान प्रणाली मौखिक रूप से पारित होती है और स्पष्ट, सुसंगत तरीके से लिखित या संगठित नहीं है। संसाधनों और बुनियादी ढांचे की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। साथ ही, परंपरागत ज्ञान को नए ढाँचे में ढालने पर परिवर्तन का प्रतिरोध भी दिखाई देता है। इन सबके बावजूद, यदि समावेशिता और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के साथ आईकेएस को लागू किया जाए तो यह एक बड़ा अवसर बन सकता है (गुप्ता, 2024; मिश्रा, 2025)।

3. शैक्षणिक सिद्धांत और भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय शिक्षा और ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध धरोहरों में से एक है, जिसने न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व को गहन वैचारिक आधार प्रदान किया।

(1) भारतीय दर्शन, वेद, उपनिषद्, दर्शन-शास्त्र और संस्कृति से शिक्षा की दृष्टियाँ

भारतीय शिक्षा प्रणाली का पहला महत्वपूर्ण आधार भारतीय दर्शन है। भारतीय दर्शन छह आस्तिक दर्शनों — सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत — तथा बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे नास्तिक दर्शनों के रूप में प्रकट हुआ। इन सभी दर्शनों ने शिक्षा को केवल तथ्यात्मक जानकारी देने की प्रक्रिया नहीं माना, बल्कि इसे **आत्मा की शुद्धि और मोक्ष प्राप्ति का साधन** माना।

- वेदों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को ऋतम् (सत्य), सत्यम् (यथार्थ) और ब्रह्मन् (परम सत्य) की ओर ले जाना है। ऋग्वेद में कहा गया है कि "विद्या अमृतत्वं आनश्नुते", अर्थात् शिक्षा अमरत्व की ओर ले जाती है।
- उपनिषदों में शिक्षा का लक्ष्य "विद्या या अज्ञान का नाश करती है" के रूप में परिभाषित किया गया है। उपनिषदों ने आत्मविद्या, ब्रह्मविद्या और परमात्मा से एकत्व की भावना पर बल दिया।
- भगवद्गीता ने शिक्षा को "स्वधर्म पालन" और "निष्काम कर्म" के साथ जोड़ा, जिसमें विद्यार्थी को केवल ज्ञान प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि कर्मशील और उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा दी गई।
- भारतीय संस्कृति में शिक्षा का संबंध धर्म (नीति), अर्थ (संपन्नता), काम (संतुलित इच्छाएँ) और मोक्ष (मुक्ति) से जोड़ा गया है, जिसे **पुरुषार्थ चतुष्टय** कहा जाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

इन शास्त्रीय दृष्टियों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय शैक्षणिक सिद्धांतों का मूलभूत उद्देश्य **समग्र विकास (cognitive, emotional, physical, spiritual)** था, न कि केवल पेशेवर या तकनीकी दक्षता।

(2) पारंपरिक गुरु-शिष्य पद्धति, मौखिक परंपरा और अनुभव-आधारित सीखना

भारतीय शिक्षा परंपरा का दूसरा महत्वपूर्ण आधार **गुरु-शिष्य पद्धति** है। इस प्रणाली में शिक्षा का केंद्रबिंदु **गुरु** होता था, जो केवल ज्ञान प्रदान करने वाला ही नहीं बल्कि जीवन के मूल्यों, अनुशासन और आत्मिक उन्नति का मार्गदर्शक भी होता था।

- गुरु-शिष्य परंपरा का उद्देश्य विद्यार्थी को "साक्षात् चरित्रवान, नैतिक और आत्मानुशासित" बनाना था। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन जीने की कला थी।
- मौखिक परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता थी। वेद, उपनिषद और अन्य ग्रंथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से संचारित होते थे। इससे स्मरणशक्ति, उच्चारण शुद्धता और गहन अनुशासन का विकास होता था।
- अनुभव-आधारित सीखना इस शिक्षा पद्धति का मुख्य आधार था। शिक्षा को केवल रटना नहीं बल्कि **अनुभव और अभ्यास** के माध्यम से ग्रहण किया जाता था। जैसे आयुर्वेद में शिक्षा औषधियों के प्रयोग और निरीक्षण से, योग में साधना से, और गणित-खगोल में प्रत्यक्ष आकाशीय अवलोकन से दी जाती थी।
- आचार्य और शिष्य के बीच का संबंध पारिवारिक एवं स्नेहपूर्ण होता था, जिससे शिक्षा का वातावरण नैतिकता, अनुशासन और आध्यात्मिक साधना पर आधारित होता था।

इस प्रणाली ने भारतीय शिक्षा को केवल बौद्धिक अभ्यास से अधिक **जीवनमूल्य आधारित शिक्षण** के रूप में स्थापित किया।

(3) बहुध्रुवीय और अंतःविषय दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा का तीसरा प्रमुख आधार **बहुध्रुवीयता और अंतःविषय दृष्टिकोण** है। यह विशेषता भारतीय शिक्षा को विश्व में अद्वितीय बनाती है।

- शिक्षा का उद्देश्य केवल एक विषय का अध्ययन नहीं, बल्कि विभिन्न विषयों के पारस्परिक संबंधों को समझना था। उदाहरण के लिए, वेदों में गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, चिकित्सा और दर्शन का समन्वय दिखाई देता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

- आयुर्वेद केवल चिकित्सा विज्ञान नहीं था, बल्कि इसमें पर्यावरणीय संतुलन, आहार-विहार, योग और मानसिक स्वास्थ्य का समावेश था।
- वास्तुशास्त्र केवल स्थापत्य कला नहीं था, बल्कि इसमें गणित, खगोल, ज्योतिष और धार्मिक प्रतीकों का समन्वय था।
- नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय बहुविषयक अध्ययन के उत्कृष्ट उदाहरण थे। यहाँ विद्यार्थी धर्म, दर्शन, गणित, चिकित्सा, साहित्य, राजनीति और शिल्पकला जैसे विविध विषयों का अध्ययन करते थे।

भारतीय शिक्षा प्रणाली ने यह मान्यता दी कि ज्ञान का कोई भी क्षेत्र स्वतंत्र नहीं है, बल्कि सभी ज्ञान क्षेत्र आपस में अंतर्संबद्ध और परस्पर सहायक हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा में भी बहुध्रुवीय और अंतःविषय दृष्टिकोण के रूप में उभर रहा है, जिसे एनईपी 2020 ने पुनः प्रोत्साहित किया है।

4. पाठ्यक्रम का प्रस्तावित स्वरूप

कोर्स उद्देश्यों

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों में निम्न क्षमताओं एवं दृष्टिकोण का विकास करना है:

- भारतीय ज्ञान परंपरा की मूलभूत समझ विकसित करना।
- मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करने की क्षमता का निर्माण करना।
- स्थानीय/आदिवासी ज्ञान एवं परंपराओं को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करना।
- समग्र शिक्षा दृष्टिकोण के प्रति सकारात्मक दृष्टि विकसित करना।
- शिक्षण में अनुभव-आधारित, संवादात्मक एवं अंतःविषय पद्धतियों का प्रयोग करना।

पाठ्यक्रम के घटक

मॉड्यूल का नाम	विषयवस्तु	शिक्षण पद्धति
भारतीय दर्शन एवं मनोविज्ञान	दार्शनिक सिद्धांत (वेद, उपनिषद, दर्शनों), मन एवं चेतना की अवधारणाएँ	संवाद, चिंतन–चर्चा, समूह चर्चा (Group Discussion)
भाषा एवं साहित्य	संस्कृत, प्राकृत, क्षेत्रीय भाषाएँ, अनुप्रस्थ साहित्य, लोककथाएँ व मौखिक परंपराएँ	पाठ-पठन, मौखिक परंपरा, कहानी-कथन
आयुर्वेद, योग एवं स्वास्थ्य	पंचकोश, आयुर्वेद की मूल अवधारणाएँ, योगाभ्यास और स्वास्थ्यकर जीवनशैली	प्रायोगिक प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ, अनुभव-आधारित सीखना

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

पर्यावरण, कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान	पारंपरिक जैविक खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, स्थानीय पारिस्थितिकी ज्ञान	बाह्य क्षेत्र अध्ययन, परियोजनाएँ, सामुदायिक सहभागिता
कला, संगीत, नाट्य एवं शिल्प	लोक कला, संगीत, नृत्य, नाट्य, हस्तशिल्प आदि	अनुभव-आधारित शिक्षा, कला-कार्यशालाएँ, प्रदर्शन
नीति, शासन एवं लोक जीविका	भारतीय शासन पद्धतियाँ, अर्थशास्त्र, नीति निर्माण, लोकजीवन की परंपराएँ	केस स्टडी, तुलनात्मक अध्ययन

क्रेडिट प्रणाली एवं अवधि

शिक्षक प्रशिक्षण (बी.एड / डी.एड / एम.एड) कार्यक्रम में कुल क्रेडिटों का लगभग 5-10% भाग भारतीय ज्ञान परंपरा (आई.के.एस.) मॉड्यूलों हेतु निर्धारित किया जा सकता है।

प्रत्येक मॉड्यूल की अवधि कार्यक्रम की संरचना के अनुसार 4–6 सप्ताह तक रखी जा सकती है।

मॉड्यूल को अनिवार्य (कोर) + वैकल्पिक (ऐच्छिक) स्वरूप में विभाजित कर लचीलापन (लचीलेपन) प्रदान किया जा सकता है।

शिक्षण-शिक्षिका प्रशिक्षण

शिक्षक-प्रशिक्षकों को स्वयं भारतीय ज्ञान परंपरा (आई.के.एस.) की मूल अवधारणाओं में दक्ष किया जाए।

प्रशिक्षकों को संस्कृति-आधारित दृष्टिकोण (संस्कृति-संविग्राहित दृष्टिकोण) अपनाने का प्रशिक्षण दिया जाए।

नई शिक्षण-पद्धतियाँ जैसे तन्त्र-युक्ति, अनुभव-आधारित शिक्षा, परियोजना-आधारित शिक्षण पर कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी) एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर आई.के.एस. मॉड्यूलों को और अधिक सुलभ व प्रभावी बनाया जाए।

5. शिक्षण पद्धतियाँ एवं मूल्यांकन

आधुनिक शिक्षक केवल ज्ञान का प्रसारक नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास में मार्गदर्शक भी होते हैं। इस संदर्भ में शिक्षण पद्धतियों को अनुभव-आधारित, प्रायोगिक, क्षेत्र-आधारित और परियोजना आधारित बनाना आवश्यक है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

अनुभव-आधारित और प्रायोगिक शिक्षण

अनुभव-आधारित शिक्षण और प्रायोगिक शिक्षण भारतीय शिक्षा प्रणाली की मूलभूत विशेषताएँ रही हैं। गुरु-शिष्य परंपरा में विद्यार्थी केवल पुस्तकीय ज्ञान ग्रहण नहीं करता था, बल्कि वास्तविक जीवन के अनुभवों, प्रयोगों और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से सीखता था। उदाहरण स्वरूप, आयुर्वेद के अध्ययन में औषधियों के प्रयोग और रोग निदान की प्रायोगिक शिक्षा, कृषि शिक्षा में प्राकृतिक संसाधनों और खेती के अभ्यास से सीखना, और योग शिक्षा में साधना के अनुभव से शरीर और मन का संतुलन समझना शामिल था। अनुभव-आधारित शिक्षण विद्यार्थियों में **संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यावहारिक कौशल** का विकास करता है। यह शिक्षार्थियों को केवल ज्ञान याद करने तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें ज्ञान का प्रयोग करने और समस्या समाधान करने में सक्षम बनाता है।

प्रायोगिक शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी सिद्धांतों को प्रत्यक्ष अनुभव में लागू करना सीखते हैं। उदाहरण स्वरूप, पारंपरिक विज्ञान शिक्षा में खगोलशास्त्र का अध्ययन केवल ग्रंथ से नहीं, बल्कि आकाशीय अवलोकन और उपकरणों के प्रयोग से कराया जाता था। इस प्रकार का शिक्षण शिक्षार्थियों को **सतत आत्मनिरीक्षण और अभ्यास** की प्रवृत्ति प्रदान करता है।

क्षेत्र अध्ययन और स्थानीय ज्ञानधारकों का सहभागिता

भारतीय शिक्षा में **क्षेत्र अध्ययन** और **स्थानीय ज्ञानधारकों का सहभागिता** भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्थानीय विद्वान, पारंपरिक कलाकार, हस्तशिल्पकार, किसान और अन्य सांस्कृतिक हस्तियों से सीखना विद्यार्थियों को न केवल वास्तविक जीवन की समस्याओं और समाधान से परिचित कराता है, बल्कि उन्हें **स्थानीय संस्कृति, कला, भाषा और ज्ञान** का अनुभव भी कराता है।

क्षेत्र अध्ययन और स्थानीय ज्ञानधारकों की सहभागिता के लाभ निम्नलिखित हैं:

- विद्यार्थियों को **सहभागिता और सहयोग** की भावना विकसित होती है।
- स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण और संवर्धन होता है।
- बहु-सांस्कृतिक और बहु-विषयक शिक्षा का अनुभव प्राप्त होता है।
- विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिकता की समझ विकसित होती है।

उदाहरण स्वरूप, ग्रामीण विद्यालयों में कृषि और पारंपरिक जल-प्रबंधन प्रणाली का अध्ययन, लोक कला और नृत्य के कार्यशालाओं का आयोजन, और ग्रामीण समुदायों में स्वास्थ्य और पर्यावरण परियोजनाओं में सहभागिता, शिक्षार्थियों को **सामाजिक और व्यावहारिक ज्ञान** से संपन्न करती है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

परियोजना आधारित और समस्या-आधारित शिक्षण

परियोजना आधारित शिक्षा और समस्या-आधारित शिक्षण शिक्षार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता प्रदान करते हैं। यह विधि शिक्षार्थियों को **स्वतंत्र सोचने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने** में सक्षम बनाती है।

परियोजना आधारित शिक्षण में विद्यार्थी किसी विशेष विषय, समस्या या सामाजिक चुनौती पर कार्य करते हैं। उदाहरण स्वरूप:

- आयुर्वेद और स्वास्थ्य विषय पर **स्थानीय औषधियों की पहचान और प्रयोग** की परियोजना।
- पर्यावरण और कृषि विषय पर **स्थानीय जैविक खेती और जल संरक्षण परियोजना**।
- कला, संगीत और शिल्प विषय पर **लोक कला का प्रदर्शन और संरक्षण कार्य**।

समस्या-आधारित शिक्षण में विद्यार्थी को किसी समस्या का सामना कराया जाता है और उसे स्वयं या समूह में मिलकर उसका समाधान खोजने की प्रक्रिया अपनानी होती है। यह विधि विद्यार्थियों में टीम वर्क, नेतृत्व और नवाचार की क्षमता विकसित करती है।

मूल्यांकन प्रणाली

परंपरागत शिक्षा में मूल्यांकन मुख्य रूप से लिखित परीक्षा तक सीमित था। आधुनिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में मूल्यांकन को **बहु-आयामी और समग्र** बनाना आवश्यक है। मूल्यांकन न केवल ज्ञान का मापन करता है, बल्कि विद्यार्थियों की **सृजनात्मक, नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक** क्षमताओं को भी दर्शाता है। मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं:

मूल्यांकन प्रकार	विवरण	उद्देश्य
पारंपरिक परीक्षा	लिखित, मौखिक, बहुविकल्पीय प्रश्न आदि	विषयगत ज्ञान और अवधारणाओं की समझ
पोर्टफोलियो (Portfolio)	छात्रों द्वारा समय-समय पर तैयार की गई नोटबुक, परियोजनाएँ, चित्रकला, शोध कार्य आदि	निरंतर मूल्यांकन, प्रगति का दस्तावेजीकरण
प्रस्तुति (Presentation)	मौखिक, डिजिटल, सांस्कृतिक प्रस्तुति	संप्रेषण क्षमता, आत्मविश्वास, समूह सहभागिता
कलात्मक / सांस्कृतिक परियोजनाएँ	लोक कला, संगीत, नृत्य, नाट्य, हस्तशिल्प परियोजनाएँ	सृजनात्मकता, सांस्कृतिक जागरूकता, व्यावहारिक कौशल

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

क्षेत्र आधारित मूल्यांकन	समुदाय परियोजना, पर्यावरण / कृषि प्रायोगिक कार्य, स्थानीय ज्ञानधारक सहयोग	वास्तविक जीवन में ज्ञान के अनुप्रयोग की क्षमता

मूल्यांकन में इन सभी आयामों का समन्वय शिक्षार्थियों को **संपूर्ण विकास** की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

शिक्षण और मूल्यांकन का समग्र महत्व

अनुभव-आधारित, प्रायोगिक और क्षेत्र आधारित शिक्षण, स्थानीय विद्वानों के सहयोग और परियोजना आधारित कार्य, शिक्षार्थियों में ज्ञान, कौशल और मूल्य का संतुलित विकास सुनिश्चित करते हैं। मूल्यांकन प्रणाली में पोर्टफोलियो, प्रस्तुति और सांस्कृतिक परियोजनाओं को शामिल करने से विद्यार्थी केवल ज्ञान की परीक्षा में नहीं बल्कि व्यक्तित्व, सृजनात्मकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में भी परखा जाता है।

इस प्रकार, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षण पद्धतियों और मूल्यांकन का यह समग्र दृष्टिकोण न केवल विद्यार्थियों को प्रासंगिक और व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करता है, बल्कि उन्हें जीवन मूल्यों, नैतिकता और संस्कृति-सम्मिलित दृष्टिकोण से संपन्न भी करता है।

6. चुनौतियाँ एवं संभावित समाधान

संसाधन की कमी

सबसे पहली और प्रमुख चुनौती संसाधनों की कमी है। पारंपरिक ग्रंथों का संग्रह अत्यंत सीमित है और अधिकांश ग्रंथ प्राचीन भाषाओं जैसे संस्कृत, प्राकृत या क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। इसके अलावा, इन ग्रंथों की डिजिटल या आधुनिक संस्करणों की उपलब्धता भी कम है। प्रशिक्षक और विशेषज्ञ जो पारंपरिक ज्ञान का गहन अनुभव रखते हैं, उनकी संख्या सीमित है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में विद्यार्थियों तक प्रामाणिक और सटीक जानकारी पहुँचाना कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद या वास्तुशास्त्र जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षकों की कमी ने कई उच्च शिक्षा संस्थानों में पाठ्यक्रमों के संचालन को प्रभावित किया है।

संतुलन की समस्या: आधुनिक और पारंपरिक ज्ञान के बीच

एक और चुनौती है आधुनिक तकनीकी शिक्षा और पारंपरिक ज्ञान के बीच संतुलन बनाए रखना। वर्तमान शिक्षा प्रणाली विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित अधिक केंद्रित है, जबकि पारंपरिक ज्ञान अक्सर मूल्य, नैतिकता और जीवन शैली के दृष्टिकोण पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए, आधुनिक विज्ञान में भौतिक तथ्यों और प्रमाण आधारित शिक्षण पर जोर होता है, जबकि भारतीय परंपरा में अनुभवजन्य, तात्त्विक और दार्शनिक दृष्टिकोण प्रमुख हैं। इस अंतर के कारण शिक्षक और छात्र दोनों के लिए पारंपरिक ज्ञान को समकालीन संदर्भ में समझना चुनौतीपूर्ण बन जाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

प्रासंगिकता की समस्या

पारंपरिक ज्ञान को आज की सामाजिक और वैज्ञानिक सापेक्षता में लागू करना एक बड़ी चुनौती है। उदाहरण के लिए, योग, आयुर्वेद, वास्तु, नैतिक शिक्षा आदि का आधुनिक जीवन में उपयोग करते समय इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण और समाज की बदलती जरूरतों के अनुरूप ढालना आवश्यक होता है। कई बार पारंपरिक दृष्टांत या शिक्षाएँ पुरानी प्रतीत होती हैं, जिससे उनका विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक बनाना कठिन होता है।

भाषाई समस्याएँ

भारतीय ज्ञान परंपरा के ग्रंथ प्रायः संस्कृत, प्राकृत, पाली, फारसी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए हैं। अधिकांश शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए इन भाषाओं में पारंगत होना मुश्किल है। अनुवाद के दौरान अर्थ का ह्रास, सांस्कृतिक सन्दर्भों की गलत व्याख्या और मूल विचारों का संकुचन होने की संभावना रहती है। इस प्रकार भाषा की बाधा ज्ञान की सटीक समझ में बड़ी चुनौती बन जाती है।

- **संभावित समाधान**

इन चुनौतियों का समाधान बहुआयामी दृष्टिकोण से किया जा सकता है:

- **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना आवश्यक है, जिससे वे पारंपरिक ग्रंथों, भाषाओं और ज्ञान प्रणाली में दक्ष हो सकें। इसके लिए विशेषज्ञों और विद्वानों के सहयोग से कार्यशालाएँ और प्रमाणित प्रशिक्षण कोर्स विकसित किए जा सकते हैं।
- **नीति समर्थन:** सरकार और शैक्षिक संस्थानों द्वारा पारंपरिक ज्ञान आधारित पाठ्यक्रमों और रिसर्च को नीति स्तर पर समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए। इसके लिए क्रेडिट सिस्टम, अनुदान और शोध प्रोत्साहन योजनाएँ लागू की जा सकती हैं।
- **शोध एवं दस्तावेजीकरण:** पारंपरिक ग्रंथों, शिक्षक और सामुदायिक ज्ञान का संकलन, दस्तावेजीकरण और शोध कार्य अत्यंत आवश्यक हैं। इससे भविष्य में शोध और शैक्षणिक सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।
- **संसाधन विकास:** डिजिटल ग्रंथालय, ऑनलाइन डेटाबेस, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री और बहुभाषी अनुवाद तैयार करके ज्ञान को अधिक सुलभ बनाया जा सकता है।
- **समुदाय सहभागिता:** स्थानीय और आदिवासी समुदायों की ज्ञान परंपरा को शिक्षा में शामिल करना आवश्यक है। इससे न केवल सामग्री प्रामाणिक बनेगी बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संवेदनशीलता भी विकसित होगी।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

- **तकनीकी सहयोग:** AI, VR और AR जैसी तकनीकों का उपयोग पारंपरिक ज्ञान को रोचक और इंटरैक्टिव बनाने में किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, वर्चुअल मंदिर यात्रा, आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी प्रयोगशालाएँ और राग आधारित संगीत शिक्षण।

7. नमूने

(क) विश्वविद्यालय और प्रशिक्षण संस्थाएँ

राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने IKS के विभिन्न पहलुओं को शामिल करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इनमें विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम (B.Ed, M.Ed) में IKS आधारित मॉड्यूल शामिल किए गए हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुभाषी संदर्भ ग्रंथ, डिजिटल संसाधन और अनुभवी विद्वानों की सहभागिता शामिल होती है।

प्रमुख विश्वविद्यालयों में IKS पाठ्यक्रम

कई विश्वविद्यालय जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय आदि ने IKS आधारित पाठ्यक्रम तैयार किए हैं। इन पाठ्यक्रमों में योग, आयुर्वेद, पारंपरिक विज्ञान, लोक कला और संगीत, दर्शन और भाषा-साहित्य के मॉड्यूल शामिल हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) और राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) ने भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित मॉड्यूल और प्रशिक्षण कार्यशालाएँ आयोजित की हैं, जिसमें स्कूल शिक्षक और प्रशिक्षक दोनों को प्रशिक्षित किया जाता है। इसमें अनुभव आधारित शिक्षा, परियोजना आधारित शिक्षण और स्थानीय ज्ञानधारकों की सहभागिता पर विशेष जोर दिया जाता है।

राज्य स्तर के उदाहरण

कई राज्य विश्वविद्यालय और शिक्षा संस्थान जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालय IKS आधारित पाठ्यक्रम चला रहे हैं। इनमें विद्यार्थियों को आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, लोक संगीत, लोक नृत्य और पारंपरिक कृषि पद्धतियों के व्यावहारिक अनुभव दिए जाते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

(ख) उदाहरण तालिका

नीचे कुछ प्रमुख संस्थाओं और उनके द्वारा लागू किए गए IKS पाठ्यक्रम के नमूने दिए गए हैं:

क्रमांक	संस्था / कार्यक्रम	IKS मॉड्यूल	प्रशिक्षित शिक्षक / विद्यार्थी (संख्या)
1	UGC – शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम	योग, आयुर्वेद, लोक कला, पारंपरिक विज्ञान	लगभग 500 प्रशिक्षक / 1500 विद्यार्थी
2	दिल्ली विश्वविद्यालय (DU)	दर्शन, भारतीय संस्कृति, भाषा-साहित्य, संगीत	लगभग 300 प्रशिक्षक / 1200 विद्यार्थी
3	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU)	पारंपरिक विज्ञान, लोक कला, प्राचीन ग्रंथ अध्ययन	लगभग 200 प्रशिक्षक / 800 विद्यार्थी
4	NCERT / NCTE कार्यशालाएँ	परियोजना आधारित शिक्षण, अनुभव आधारित शिक्षा	लगभग 400 शिक्षक
5	महाराष्ट्र विश्वविद्यालय	आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, लोक संगीत और नृत्य	लगभग 250 प्रशिक्षक / 900 विद्यार्थी
6	कर्नाटक विश्वविद्यालय	पारंपरिक कृषि पद्धति, लोक कला, स्वास्थ्य शिक्षा	लगभग 200 प्रशिक्षक / 700 विद्यार्थी

(ग) विश्लेषण

इन उदाहरणों से निम्न बिंदु स्पष्ट होते हैं:

- IKS पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन न केवल उच्च शिक्षा संस्थानों तक सीमित है, बल्कि राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावी रूप से किया जा रहा है।
- अनुभव आधारित और परियोजना आधारित शिक्षण इस शिक्षा का मुख्य आधार है।
- स्थानीय ज्ञानधारकों और विद्वानों की सहभागिता पाठ्यक्रम की गुणवत्ता और प्रासंगिकता को बढ़ाती है।
- प्रशिक्षकों और विद्यार्थियों की संख्या दिखाती है कि इन कार्यक्रमों का प्रभाव व्यापक और स्थायी है।

8. निष्कर्ष एवं सिफारिशें

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक पुनरुत्थान, मूल्य-आधारित शिक्षण, और समावेशी पाठ्यचर्या निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं। यह शोध दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा—जिसमें वेद,

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

उपनिषद, आयुर्वेद, योग, दर्शन, और लोकज्ञान शामिल हैं—के तत्वों को यदि शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में समाहित किया जाए, तो शिक्षकों की दृष्टि, संवेदनशीलता और नैतिक बोध में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पश्चिमी दृष्टिकोण की प्रधानता ने भारतीय संदर्भों को हाशिए पर डाल दिया है, जिससे शिक्षण प्रक्रिया में स्थानीयता, सांस्कृतिक पहचान और मूल्यबोध की कमी महसूस होती है।

शोध के निष्कर्षों के अनुसार, भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करने से शिक्षकों में आत्मबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व, और समग्र दृष्टिकोण विकसित होता है। यह दृष्टिकोण केवल विषयवस्तु के ज्ञान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिक्षण को एक जीवन-दृष्टि के रूप में प्रस्तुत करता है। शोध में यह भी पाया गया कि जब शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा, और भारतीय दर्शन के तत्वों को शामिल किया गया, तो प्रशिक्षु शिक्षकों की आत्म-प्रेरणा, अनुशासन और शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता में सकारात्मक परिवर्तन आया।

नीति निर्माताओं के लिए यह शोध स्पष्ट संदेश देता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की भावना को मूर्त रूप देने के लिए शिक्षक-शिक्षा पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश अनिवार्य है। पाठ्यचर्या निर्माण में स्थानीय भाषाओं, सांस्कृतिक प्रतीकों, और परंपरागत ज्ञान प्रणालियों को स्थान देना चाहिए। इसके लिए एक बहुस्तरीय रणनीति अपनाई जा सकती है जिसमें पाठ्यक्रम संशोधन, शिक्षक प्रशिक्षण, और मूल्यांकन पद्धतियों का पुनर्गठन शामिल हो। साथ ही, शिक्षक-शिक्षा संस्थानों को ऐसे संसाधन केंद्रों की स्थापना करनी चाहिए जो भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित सामग्री, प्रशिक्षण मॉड्यूल, और शोध को प्रोत्साहित करें।

विश्वविद्यालयों के लिए यह शोध एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है। उन्हें अपने बी.एड., एम.एड., और अन्य शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित पाठ्यक्रमों को विकसित करना चाहिए। इसके लिए अंतरविषयक दृष्टिकोण अपनाते हुए शिक्षा, दर्शन, इतिहास, और संस्कृति के विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है। विश्वविद्यालयों को शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित पीएच.डी. कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, और कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं को चाहिए कि वे प्रशिक्षु शिक्षकों को भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षण की समझ प्रदान करें। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा, और भारतीय शिक्षाशास्त्र के सिद्धांतों को शामिल किया जाए। संस्थाओं को स्थानीय समुदायों, गुरुकुलों, और परंपरागत ज्ञान धारकों से संवाद स्थापित कर प्रशिक्षण को अधिक जीवंत और प्रासंगिक बनाना चाहिए।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

भविष्य के शोध की दिशा में यह आवश्यक है कि विभिन्न भारतीय ज्ञान प्रणालियों—जैसे आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, संगीत, और लोककथाओं—के शिक्षण में प्रभाव का विश्लेषण किया जाए। साथ ही, यह भी शोध किया जाना चाहिए कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षण किस प्रकार से छात्रों के मूल्यबोध, रचनात्मकता, और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रभावित करता है। क्षेत्रीय विविधताओं को ध्यान में रखते हुए तुलनात्मक अध्ययन किए जा सकते हैं, जिससे एक समावेशी और बहुलतावादी शिक्षक-शिक्षा मॉडल विकसित किया जा सके।

यह शोध भारतीय शिक्षा प्रणाली को उसकी जड़ों से जोड़ने, शिक्षकों को सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाने, और शिक्षा को एक मूल्य-आधारित प्रक्रिया के रूप में पुनर्परिभाषित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

संदर्भ

1. आचार्य, हजारीप्रसाद. (1955). *भारतीय संस्कृति के स्वर*. प्रयाग: लोकभारती प्रकाशन।
2. अग्निहोत्री, आर. के. (2018). *भारतीय शिक्षा का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य*. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
3. बाली, एस. (2020). *गुरुकुल प्रणाली और आधुनिक शिक्षा*. भारतीय शिक्षाशास्त्र जर्नल, 12(3), 45–58।
4. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
5. चतुर्वेदी, एम. (2017). *भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षण में समावेश*. शिक्षा विमर्श, 8(2), 22–30।
6. दास, पी. (2019). *योग और ध्यान आधारित शिक्षक प्रशिक्षण*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 15(1), 67–75।
7. गोस्वामी, आर. (2016). *भारतीय दर्शन और शिक्षाशास्त्र*. वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
8. कुमार, ए. (2021). *भारतीय परंपरागत ज्ञान और समकालीन शिक्षा*. एजुकेशन एंड कल्चर, 9(4), 88–95।
9. मिश्रा, एस. (2015). *शिक्षक-शिक्षा में मूल्य शिक्षा का स्थान*. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 10(1), 33–40।
10. नंदा, बी. आर. (2014). *भारतीय शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि*. नई दिल्ली: ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

11. पांडेय, वी. (2022). *भारतीय ज्ञान परंपरा और पाठ्यक्रम विकास*. शिक्षा संवाद, 6(2), 51–60।
12. पटेल, के. (2018). *गुरुकुल से विश्वविद्यालय तक: शिक्षा का विकास*. गुजरात एजुकेशन जर्नल, 7(3), 72–80।
13. शर्मा, आर. (2019). *भारतीय शिक्षाशास्त्र में समग्र दृष्टिकोण*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
14. शुक्ला, डी. (2020). *भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरावलोकन*. सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 11(2), 39–47।
15. सिंह, ए. (2021). *शिक्षक प्रशिक्षण में भारतीय तत्वों का समावेश*. टीचर एजुकेशन टुडे, 14(1), 25–32।